The Concert Of Europe

यूरोप की संयुक्त व्यवस्था

1

BY
DR. JYOTI SAH
EMAIL ID –JYOTISAH67@GMAIL.COM

MOB.NO.-9451250315
ASSOCIATE PROFESSOR (HISTORY)

यूरोप की संयुक्त व्यवस्था–पृष्ठभूमि

- नेपोलियन को पराजित करने के पश्चात यूरोप के प्रमुख देशों ने यूरोप में शान्ति स्थापित करने एवं समस्याओं को पारस्परिक सहयोग द्वारा सुलझाने हेतु एक संगठन बनाने की आवश्यकता महसूस की। **1815** में यूरोप के प्रमुख देश **आस्ट्रिया, रूस, प्रशा** और **इंग्लैण्ड** ने इस पर विचार किया।
- इसके अर्न्तगत दो घोषणाएं की गयीं–

1. पवित्र संघ “Holy Alliance”
2. चतुर्मुख मंडल “Quadruple Alliance”

पवित्र संघ **"Holy Alliance"**

- रूस के ज़ार एलेक्जेन्डर प्रथम (Tsar Alexander I) द्वारा **26 सितम्बर, 1815** को इस पवित्र संघ की घोषणा की गयी। इस पर ज़ार की अध्यात्मिक सलाहकार बारबरा वान करूदनेर का प्रभाव था।
- पवित्र संघ का उद्देश्य– यूरोप में शान्ति बनाए रखना।
- यह प्रत्येक यूरोपीय राजा के लिए थी। इसके अनुसार राजाओं को अपना शासन धर्म, न्याय, उदारता और शान्ति के सिद्धान्तों पर आधारित करना चाहिए। शासक और शासितों के मध्य पिता–पुत्र के सदृश सम्बन्ध व्यवहार होना चाहिए।

पवित्र संघ **“Holy Alliance”**

- ज़ार एलेक्जेन्डर का कथन– ‘भविष्य में सभी राजा अपने को एक दूसरे का भाई समझें।’
- यह योजना राजत्व के दैवीय सिद्धान्त पर आधारित थी। राजाओं को पवित्र पुस्तक बाइबिल और इसाई धर्म के सिद्धान्तों के आधार पर शासन करना था।
- पवित्र संघ के घोषणा पत्र पर पोप, तुर्की के सुल्तान तथा इंग्लैण्ड के विदेश मंत्री कैसलरे ने हस्ताक्षर नहीं किए। अन्य यूरोपीय राज्य इसके सदस्य बने।
- यह असफल रही।

पवित्र संघ “Holy Alliance”

- इंग्लैण्ड ने इसलिए इसे स्वीकार नही किया था, क्योंकि इसे स्वीकारने पर उसकी पूर्व में की गयीं सन्धियाँ प्रभावित होतीं।
- आस्ट्रिया ने इसे केवल ज़ार एलेक्जेंडर को प्रसन्न करने के लिए स्वीकार किया।
- पवित्र संघ की अधिकांश राजनीतिज्ञों द्वारा आलोचना की गयी।–
- आस्ट्रिया का चांसलर मैटरनिख (Metternich) ने कहा –यह ‘बड़ी दिखने वाली निरर्थक योजना’ है।

पवित्र संघ **“Holy Alliance”**

- इंग्लैण्ड के कैसलरे (Lord Castlereagh) ने कहा–‘यह व्यर्थ की बकवास तथा रहस्यवादी थी’ (a piece of sublime mysticism and nonsense.)
- फ्रांस के मंत्री तालिरां (Talleyrand) ने इसे हास्यास्पद योजना बताया।
- परन्तु इतिहासकार केटलबी का कथन है– ‘अपने उद्देश्यों में पवित्र संघ न तो कपटपूर्ण था ओर न ही अनुदार’

संदर्भग्रंथ तथा सहायक पाठ्य सामग्री

- यूरोप का इतिहास–लाल बहादुर वर्मा, भाग–2, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 1998
- विश्व इतिहास– जैन एवं माथुर, जयपुर, 1999
- यूरोप का इतिहास–पार्थसारथी गुप्त, दिल्ली, 1993
- आधुनिक काल का इतिहास– केटलबी, दिल्ली, 1968
- A History of Modern Times- C.D.M.Ketelbey
- Modern Europe to 1870-J.H.Hayes ,New York,1959
- A History of Europe –H.A.L.Fisher
- Modern European History-C.D.Hazen

Weblinks

- www.en.wikipedia.org/wiki
- www.britannica.com
- www.merriam-webster.com
- www.khanacademy